शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नागार्जुन के साहित्य में ग्रामीण जीवन
('नई पौध' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)

रेखा कछावा (शोधार्थी)
हिंदी साहित्य
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य- समय, परिस्थितियाँ के साथ-साथ चलता है जो साहित्य समय से कदम-ताल मिलाकर नहीं चलता है वह सही मायने में सफल साहित्य नहीं हो सकता है। नाजार्गुन की गिनती ऐसे ही उपन्यासकारों में होती है। ग्रामीण जीवन से नागार्जुन गहराई से जुड़े हुए हैं, क्योंकि ये अपना अस्तित्व ग्रामीण जीवन में मानते हैं। यूँ तो नागार्जुन ने बहुत से उपन्यास लिखे लेकिन ग्रामीण जीवन पर लेखनी आपकी वि शिष्ट रही है। ग्रामीण परिवे श की समस्या को जोर-शोर से उजागर किया और व्यापक समाधान भी बताया है यह नागार्जुन की वि शेषता है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'नई पौध' उपन्यास में ग्रामीण जीवन की समस्या को रेखांकित किया गया है।

प्रस्तावना

बाबा नागार्जुन ने अपने समय में होने वाली विशेषत: ग्रामीण क्षेत्र में होने वाली परिस्थितिगत हो रही उथल-पुथल से बारीकी से देखा और अपनी रचना के माध्यम से सामने लाये। साहित्य का काम सिर्फ समय मूलक समस्या को उठाना और उठाकर पाठक को सोचने पर मजबूर कर देना भर ही नहीं है , वरन् उसका समाधान करना भी है। इस पर नागार्जुन खरे उतरते हैं। "मंत्री से लेकर संतरी तक बनिया व्यापारियों से लेकर उद्योगपतियों तक और तथाकथित कवियों से लेकर सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यकर्ताओ के गठजोड़ से लूट की जो दुनिया आज जो खड़ी की गई है उसका बेलाग शब्दों में पर्दाफा श करते हैं नागार्जुन।"1 ''नागार्जुन का समस्त औपन्यासिक कृतित्व इस बात की एक बहुत अच्छी मिसाल है कि पात्रों और उसके परिवे श की सही पहचान कैसे किसी लेखक के लिये रक्षा-कवच का काम देती है और किसी भी कलात्मक कलाबाजी की अपेक्षा, लेखक की जिन्दगी की सही और मजबूत पकड़ ही उसे बहुत सी गलतियों से बचाये रख सकती है।"2 ऐसे विचार नागार्जुन के बारे में रखे जाते हैं।

उपन्यास 'नई पौध' में ग्रामीण जीवन

नागार्जुन का उपन्यास 'नई पौध ' 1953 में प्रकाशित हुआ है, जिसकी मुख्य पात्र बिसेसरी है जो गरीब है। पिता के देहान्त के बाद माँ सहित नाना के घर रहती है। नाना पंडित खोंखई झा के सात लड़कियाँ और पाँच लड़के हैं। पंडिताई का कद दिन पर दिन नाटा होता गया और "देव की इच्छा ही उनके तमाम दु:खों की दवा थी। "3 पंडित खोंखई स्वार्थी हैं , पैसे के लालच में

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लड़कियों की शादी बूढ़े व्यक्तियों से कर दी अब बिसेसरी का नम्बर था , माँ को यह चिंता सता रही थी। बिसेसरी 15 साल की किशोरी थी और नाना ने 60 साल के बूढ़े से उसके ब्याह की बात पक्की कर दी थी। बिसेसरी को जब पता चला तो वह बहुत दुःखी हुई। रह-रह कर बिसेसरी के मन में यही तरंग उठती थी कि "कुएँ में जाकर कूद पड़े ... बीच आँगन में खड़ी होकर चिल्ला पड़े इससे अच्छा यही होगा कि भगवती दुर्गा की पीड़ी पर मेरी बलि चढ़ा दो । "4 बिसेसरी के दुखों की इन्तहा इन शब्दों से भली भाँति हो जाती है। पाँच-सात नौजवानों का एक सोशलिस्ट समूह है गाँव में जो पढ़ाई के साथ-साथ घर पर अपना फर्ज भी निभाते हैं और गाँव में जो समस्या होती उसका निवारण की को शिश करते हैं, पुराने लोग इसे अपने प्रतिद्वन्दी के रूप में देखते थे। खोंखई पंडित को इस समूह से विशेष चिड़ थी। सो शलिस्ट समूह ने गाँव में एक पुस्तकालय खोला । यहाँ वहाँ से किताबें इकट्ठी कर। "समय की धारा से ये अपरिचित नहीं थे। बड़े-बूढ़ों की कठोर से कठोर नुक्ताचीनी उनसे सुनी जा सकती थी।"5

"पिछले साल इस समूह ने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के पास दरखास्त दी - "हमारे गाँव का मुखिया चीनी और किरासिन के बँटवारे में धाँधली करता है, इस गड़बड़ी को फौरन दुरस्त किया जाए। "6 इसका असर ऐसा हुआ सप्लाई-इंस्पेक्टर आकर गवाही लेकर गया और इस तरह स्थिति में सुधार आ गया और इस तरह पूरे गाँव पर सोशलिस्ट समूह की धाक जम गई। समस्या ग्रस्त , सताये हुए लोग छुपके-छुपके इन्हें अपनी समस्या बताया करते थे।

"गुट की गतिविधियों से परिचित दो-तीन ब हू-बेटियाँ भी इस गाँव में। "7 लेखक यह बताना चाहता है कि गाँव की भलाई के लिए महिलाएँ भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती थीं। सो शलिस्ट समूह के लिए "एजेंडा जैसी चीज पहले से तय करके नहीं रखी जाती जब जैसा मौका आया वैसे बात उठी और 'एक्षन' लेने या न लेने का फैसला ले लिया गया। "8 यह समूह तात्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर हर समस्या का समाधान करने की कोशिश करता और सफल भी होता था। वैसे तो "खेल-कूद, मनोरंजन, मामूली बात-विचार और छौकरों की आपसी शिकायतों को सुलझाने तक ही इनकी गतिविधियाँ सीमित थी। लेकिन पिछले साल एक ऐसी घटना हो गई गुट को सयानों के अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप करना पड़ा और तभी से चंद कि शोरों की यह छोटी सी जमात 'बमपार्टी' जैसे गौरवपूर्ण नाम से भूषित भाषित होने लगी। रोष , आवेश, व्यंग्य और चिढ़ के मारे खोंखा पंडित ने ही इस गुट का ऐसा नामकरण किया था। क्यों ?

क्योंकि पंडित के स्वार्थ पर गुट ने करारी चोट की थी।"9 इस समूह में दिगंबर , वाचस्पति झा, बुलो, मल्लिक, माहे थे। ''और आज समुचे गाँव की नाक कटने वाली थी। 15 साल की बिसेसरी 60 साल के चतुरानन चैधरी को ब्याही जाने वाली थी।"10

इस बेमेल विवाह जिसे लेखक ने बड़े प्रभावी ढ़ंग से उठाया है और नए विचारों वाली नई पीढ़ी से विप्लवी समाधान दिलाया है।

पंडित के घर बारात लेकर दूल्हा आती है , सोशलिस्ट समूह ऐसी बरबादी को हर-हाल में रोकना चाहता है। इनके शब्दों में "बिसेसरी जैसी तो इनकी नाती-पोती होगी . . .यह अभी सीधे नहीं मानेंगे तो बाँध-बूँधकर और खटोले पर ढोकर इन्हें कल तक फिर सौराठ पहुँच दिया जाएगा , इन्हीं के खिलाफ कल नौजवानों का हम एक

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जुलूस निकालेंगे। समझ क्या रखा है इन्होंने आखिर।"11 इस कथन का ऐसा असर पड़ता है कि दुल्हा कह उठता है "काल बली जो न दिखावे जो न सुनावे। उठो, चलें ! - बाबू चतुरानन चौधरी ने अपने भान्जे से कहा और माथे पर पगड़ी डालकर उठ खड़े हुए।"12 इस प्रकार नई पौध ने बिसेसरी के जीवन को बर्बाद होने से बचा लिया। अब बिसेसरी के जीवन में खु शिया तो आई लेकिन एक संकट भी उठ खड़ा हुआ। अब उसकी शादी की बात जहाँ भी चलती चतुरानन चैधरी उसे तुडवा देता। नाना खोंखाई पंडित का स्वभाव अब पहले से ज्यादा हिटलरनुमा हो गया। ऐसे में बिसेसरी का कुदान भरने की कल्पना एक असंभावित स्वप्न था। बिसेसरी विचार करती है कि सुखद भविष्य की सोच क्या सिर्फ एक सोच बन कर ही रह जायेगी या कभी साकार रूप भी लेगी। समय परिवर्तन शील है , समस्या है तो समाधान भी है। स्थितियों के बदलाव के लिए सोशलिस्ट ग्रुप का मुख्य कर्ता दिगंबर अपने मित्र वाचस्पति से मिलने जाता है। वाचस्पति के माता-पिता "प्राचीन परम्पराओं के प्रति आस्थावान होते हुए भी नए युग की ओर उनका दृष्टिकोण असहिष्णुता का शिकार कदाचित ही हुआ हो।"13 यही कारण है कि वाचस्पति गाँव की भलाई में अपना योगदान देने वाला बना। पर वाचस्पति से माँ को एक शिकायत थी वह ब हू की कल्पना करती , हर माता-पिता की तरह वह चाहती कि वाचस्पति विवाह कर ले लेकिन वाचस्पति इससे कतराता था। एकाएक दिगंबर के दिमाग में एक विचार कोंधता है कि इस समस्या का समाधान है। इस बाबत् दिगंबर वाचस्पति से कहता है कि "बिसेसरी बड़ी समझदार और बहादुर लड़की है। बोझा बनकर तुम्हारी गर्दन नहीं तोड़ीगी वह। साथ रखोगे और माकूल ट्रेनिंग दोगे तो अच्छी से अच्छी साथिन बनेगी।"14 बात को अगर अच्छे से समझा दिया जाये तो तुरंत समझ में आ जाता है और वाचस्पति बिसेसरी से विवाह करने को तैयार हो जाता है। सिर्फ बिसेसरी और उसकी माँ ही नहीं वरन् पूरे गाँव वाले इस सुखद परिवर्तन से प्रसन्नचित थे।

निष्कर्ष

नागार्जुन ने अपने साहित्य में अनेक विषय पर लिखा है पर ग्रामीण जीवन पर लिखना इनकी विशेषता रही है। 'नई पौध' में नागार्जुन ने 'बेमेल विवाह' से 'सुमेल विवाह' समस्या- समाधान वाली दृष्टि रखी है। नागार्जुन अपने उपन्यास के माध्यम से जो कहना चाहते थे वे उसमें वह पूर्णतः सफल रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1 नागार्जुन, 'नई पौध', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, इलाहाबाद, पटना, 1953

2 सिन्हा, अनिल, 'लोकसिद्ध गद्यकार नागार्जुन', अलाव पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2011, पृष्ठ-263

2. गुंजन राम निहाल , "नागार्जुन: रचना प्रसंग और दृष्टि, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, सं.2002, पृष्ठ. 159

3. नागार्जुन, 'नई पौध', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, इलाहाबाद, पटना, 1953, पृष्ठ. 8

4. वही, पृष्ठ -40

5. वही, पृष्ठ13

6. वही, पृष्ठ13

7. वही, पृष्ठ14

8. वही, पृष्ठ14

9. वही, पृष्ठ14

10. वही, पृष्ठ17

11. वही, पृष्ठ16

12. वही, पृष्ठ62

13. वही, पृष्ठ110

14. वही, पृष्ठ112